International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 16-12-2020; Accepted: 05-01-2021; Published: 28-01-2021
www.hindijournal.com
Volume 7; Issue 1; 2021; Page No. 89-92

हिंदी में रोजगार के अवसर

डॉ रेशू चौहान
असिस्टेंट प्रोफेसर, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, जैन कन्या पीजी कॉलेज, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
वर्तमान समय में शिक्षा का सर्वप्रमुख उद्देश्य रोजगार प्राप्ति समझा जाने लगा है क्योंकि जो शिक्षा व्यक्ति के जीविकोपार्जन में सहायक नहीं है वह ग्राह्य और उपयोगी भी नहीं है। इस शोध पत्र के अंतर्गत हिंदी भाषा में रोजगार के अनेक माध्यमों पर प्रकाश डाला गया है क्योंकि हिंदी अब केवल अध्ययन – अध्यापन के सीमित दायरे से बाहर निकलकर रोजगारपरक और वैश्विक स्तर पर भी उपयोगी एवं महत्वपूर्ण हो गई है। इसका प्रयोग करने वालों की संख्या भी दिन– प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। यह विश्व की तीसरी सबसे बड़ी भाषा के रूप में प्रसिद्ध भी प्राप्त कर चुकी है; अतः नई पीढ़ी भी हिंदी भाषा को अपनाकर इसे अपने जीविकोपार्जन का माध्यम बना सकती है।

मूल शब्दः शिक्षा, रोजगार, हिंदी भाषा, तकनीक, कंप्यूटर, प्रकाशन, कार्यालय, अध्ययन– अध्यापन, लेखन, मीडिया, गूगल, जनसंचार, मोबाइल, आकाशवाणी, मनोरंजन, पत्रकारिता, भूमंडलीकरण, अनुवाद, विज्ञापन आदि

वर्तमान समय में युवाओं एवं उनके अभिभावकों की सबसे बड़ी समस्या रोजगार है। यह व्यक्ति की सभी मूलभूत आवश्यकताओं को पूर्ण करने का सर्वप्रमुख माध्यम है। रोजगार के अभाव में व्यक्ति का अस्तित्व ही नहीं है। प्राचीन समय में तो व्यक्ति की जाति, समुदायों का निर्धारण भी उनके व्यवसाय को दृष्टि में रखकर किया जाता था और व्यवसाय उनके व्यक्तित्व की पहचान भी थे। आज के समय में सभी व्यक्तियों को शिक्षा का समान अधिकार है, अतः व्यवसाय चुनने की समान स्वतंत्रता भी है। आज सभी व्यक्ति अपनी इच्छा एवं रुचि के अनुसार अपना रोजगार चुनने में स्वतंत्र हैं। ऐसे समय में युवा हिंदी भाषा को एक प्रमुख विकल्प के रूप में आत्मसात कर सकते हैं । आज हिंदी व्याकरणिक दृष्टि से भी समृद्धशाली भाषा है और इसे वैश्विक स्तर पर भी ख्याति प्राप्त हो चुकी है। हिंदी को लेकर व्यक्ति में हीन भावना भी समाप्त होती जा रही है। उनके समक्ष अपनी मातृभाषा में कैरियर बनाने के कई विकल्प हैं इसलिए विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार भी की अपार संभावनाएं हैं।

अध्यापन के क्षेत्र में

समाज में एक अध्यापक को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है इसीलिए हिंदी को चुनकर एक सफल अध्यापक, प्राध्यापक बना जा सकता है। भारत में राज्य स्तरीय स्लेट परीक्षा एवं राष्ट्रीय स्तरीय नेट परीक्षा आदि के द्वारा महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर बन जा सकता है । केंद्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय तथा राजकीय विद्यालय आदि में सरकारों द्वारा समय–समय पर रिक्तियां निकलती हैं जिसमें वरिष्ठ प्राध्यापक एवं अध्यापक, टीजीटी, पीजीटी अध्यापन हेतु छात्र आवेदन कर सकते हैं; इसके लिए छात्र का हिंदी व्याकरण एवं साहित्य की मूल पुस्तकों एवं आलोचकों द्वारा लिखित पुस्तकों का गहन अध्ययन अपेक्षित है। यह क्षेत्र हिंदी के अध्ययन करने वालों के लिए एक स्थाई चुनाव है। इस क्षेत्र में विद्यालयों, महाविद्यालयों में पात्रता के अनुसार तैयारी करनी पड़ती है ,जैसे विद्यालयों में एम. ए . हिंदी के साथ–साथ बी.एड, डीएलएड आदि प्रतियोगी परीक्षा में सफलता प्राप्त करनी होती है तब जाकर वह योग्य पात्र बनते हैं। आजकल ऑनलाइन शिक्षा द्वारा देश–विदेश में शिक्षण कार्य भी होता है जिससे व्यक्ति अपनी वेबसाइट तथा ऐप विकसित करके अपना ही पाठ्यक्रम निर्धारण कर सकते हैं और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अध्यापन कार्य कर सकते हैं। यह एक शिक्षण व्यवसाय की तरह कार्य करता है जिसमें सभी कार्य घर बैठे ऑनलाइन हो जाते हैं। ऑनलाइन माध्यम से व्यक्ति एक स्थान पर घर बैठकर कार्य कर सकता है। इस कार्य में में व्यक्ति को हिंदी की जानकारी के साथ कंप्यूटर और मोबाइल पर कार्य करने की भी जानकारी होनी चाहिए।

प्रशासनिक क्षेत्र में

वर्तमान समय में भारत सरकार के सभी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग की अनिवार्यता है। लगभग सभी कार्यालयों में हिंदी को केंद्र में रखकर नियुक्ति निर्धारण की जाती है। राज्यों एवं केंद्र सरकारों के विभिन्न कार्यालयों में भाषा विशेषज्ञ हिंदी अधिकारी आदि पदों की नियुक्ति होती है यह पदाधिकारी अपने – अपने कार्यालय में हिंदी में कार्य करने को प्राथमिकता देने हेतु नियुक्त किए जाते हैं इससे दो लाभ होते हैं एक तो हिंदी का वर्चस्व एवं लोकप्रियता बढ़ती है और दूसरे पत्रावलियां जन–सुलभ हो जाती हैं। इन पदों के लिए समय–समय पर राज्य एवं केंद्र सरकारों की ओर से लिखित प्रतियोगी परीक्षाएं भी आयोजित की जाती है; जैसे कर्मचारी चयन आयोग, रेलवे विभाग, सरकारी बैंक, न्यायालय विभाग, शिक्षा विभाग, तथा कई अन्य सरकारी संस्थानों में विभिन्न पदों पर यह अधिकारी कार्य करते हैं। जो व्यक्ति टाइपिंग में निपुण हैं वे हिंदी भाषा ज्ञान को और अधिक विकसित करके अपना कैरियर बना सकते हैं। कार्यालय में हिंदी भाषी पदाधिकारी को प्रोन्नति भी मिलती है। सन् 1981 में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा का गठन इसका प्रमाण है जिसमें अंतरिक्ष, परमाणु, ऊर्जा विभाग तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी विषय में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्ति ही अर्ह होते हैं "इस प्रकार हिंदी का प्रयोग प्रशासनिक रूप में होता है और यहां हिंदी भाषा में पारंगत व्यक्तियों की नियुक्ति की जाती है"(१)

पत्रकारिता एवं जनसंचार के क्षेत्र में

अपने प्रारंभिक चरण में पत्रकारिता का उद्देश्य केवल जन जागरण तक ही था किंतु वर्तमान में यह रोजगार प्राप्ति में भी अत्यंत सहायक सिद्ध हो रही है।

यह क्षेत्र अत्यधिक विस्तृत है और इसमें रोजगार की अपार संभावनाएं हैं। यह एक बहु आयामी क्षेत्र है जिसमें नित नवीन प्रयोग होते हैं। वर्तमान समय में मीडिया जनसंपर्क के नवीन साधन खोज रही है। व्यक्ति में यदि संचार कौशल है और हिंदी में वह मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति करने में सक्षम है तो उसे यहां प्रतिदिन नवीन संभावनाएं एवं अवसर प्राप्त होते हैं।

मल्टीमीडिया और डिजिटल मीडिया का विस्तार होने से इस क्षेत्र में प्रतिस्पर्धाएं और चुनौतियां भी हैं। इस क्षेत्र में सफल होने के लिए व्यक्ति को स्वयं को अपडेट रखना पड़ता है और समय–समय पर उससे परिवर्तनशीलता की अपेक्षा भी की जाती है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में पारंपरिक पत्रकारिता तो मुख्य साधन है ही साथ ही आज के समय में प्रत्येक वस्तु का डिजिटलीकरण हो रहा है और जनता को प्रतिदिन नवीन समाचार भी चाहिए। इस क्षेत्र में पहले प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का वर्चस्व था किंतु अब डिजिटल मीडिया का दौर है इसीलिए मीडिया के साथ भी परिवर्तनकारी अनुभव होते रहते हैं। पत्रकारिता केवल प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तक ही सीमित नहीं है वरन् सोशल मीडिया का भी विस्तार हो चुका है। अब प्रत्येक व्यक्ति के पास अभिव्यक्ति का साधन उसके मोबाइल में है आधुनिक संचार तकनीक में जनसंपर्क के अनेक माध्यमों द्वारा रोजगार प्राप्ति की जा सकती है जिसमें प्रिंट पत्रकारिता में संपादक, उप संपादक, रिपोर्टर, फीचर लेखक, स्तंभकार, प्रूफरीडर, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में एंकर, न्यूज़ रीडर, स्क्रिप्ट राइटर, न्यूज़ लेखक, तथा डिजिटल मीडिया में कंटेंट राइटर, वेब एडिटर, वेबसाइट मेकर, सोशल मीडिया प्रभारी, डिजिटल न्यूज़ रिपोर्टर तथा ऑनलाइन लाइव प्रसारण से संबंधित टीमवर्क में काम करने वाले ब्लॉग लेखक आदि विभिन्न पदों पर कार्य कर सकते हैं। इसमें व्यक्ति के लिए सूचना के तकनीकी ज्ञान के साथ पत्रकारिता में डिप्लोमा एवं डिग्री कोर्स भी अनिवार्य आवश्यकता है। अब फ्रीलांस पत्रकार भी होने लगे हैं और यह बिना किसी समाचार एजेंसी या प्लेटफार्म से जुड़कर अपना स्वतंत्र लेखन कार्य कर सकते हैं और अपनी इच्छानुसार किसी भी समाचार पत्र ,पत्रिका या चौनल के लिए कार्य कर सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय पत्रकार के रूप में विदेश में भी अपार संभावनाएं हैं। विदेश में अंतरराष्ट्रीय समाचार एजेंसी बीबीसी हिंदी तथा वॉइस ऑफ अमेरिका आदि एजेंसियां कार्य करती हैं जिनके माध्यम से व्यक्ति विदेश में भी कार्य कर सकता है।

अनुवाद के क्षेत्र में

एक कहावत है 'चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर वाणी' अर्थात भाषा क्षेत्रीय सीमाएं लाघंती है और दूसरे क्षेत्र में जाकर अपना रूप बदल लेती है। अब यदि व्यक्ति को किसी अन्य भाषा– भाषी व्यक्ति से संपर्क या संवाद स्थापित करना है तो स्वाभाविक सी बात है उसे उसकी भाषा सीखनी होगी या वह उसकी भाषा को अनुवाद के द्वारा जानने की कोशिश करेगा। ग्लोबलाइजेशन के इस दौर में भाषा को समझना एक आम समस्या है क्योंकि कुछ दूरी पार करते ही भाषा में परिवर्तन हो जाता है। यदि एक व्यक्ति को दूसरी जगह के विषय में जानना है तो उसे उस क्षेत्र की भाषा के बारे में भी जानना पड़ेगा। हिंदी भाषा का चयन करके व्यक्ति अनुवादक के रूप में अपना कैरियर बना सकते हैं। अच्छे अनुवादक की मांग हमेशा रहती है। आज देश–विदेश के कई सरकारी, गैर सरकारी संस्थानों, विभागों एवं क्षेत्रों में अनुवादक को एक आकर्षक वेतन पैकेज प्रदान किया जाता है, साथ ही प्रसिद्धि भी प्राप्त होती है। "केंद्र सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन और विभिन्न संवैधानिक प्रावधानों के अनुपालन के लिए केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों में अंग्रेजी– हिंदी अनुवादकों की भारी माँग रहती है।" (२) वैश्विक परिदृश्य पर देखें तो अनुवादक की आवश्यकता हर क्षेत्र में पड़ती है। विश्व की सभी कंपनियां एक दूसरे के साथ अनुबंध के तौर पर संवाद स्थापित करती हैं जिसमें उनकी सहायता अनुवादक ही करते हैं। अनुवादक के अभाव में वे एक दूसरे के साथ संवाद स्थापित करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। कई अंतरराष्ट्रीय संगठन और बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपने यहां अनुवादक की आधिकारिक नियुक्ति करती हैं। सरकारी विभागों, विदेश मंत्रालय के अंतर्गत समय–समय पर राजभाषा अधिकारी, अनुवादक, सहायक निदेशक तथा निदेशक आदि पदों पर नियुक्तियां निकलती है जिसमें युवा अपना कैरियर बना सकते हैं। इसके साथ ही पुस्तकों, पत्रावलियों, विज्ञापनों, सूचनाओं, फिल्म, नाटक, यात्रा साहित्य आदि का अनुवाद करके भी इस क्षेत्र में रोजगार प्राप्त किया जा सकता है। वर्तमान समय में विश्व के सभी देशों में दूरियां कम हो रही है। अनुवाद के द्वारा एक देश दूसरे देश की संस्कृति, धर्म, साहित्य और व्यापार आदि में विचार – विनिमय कर सकते हैं। पहले अनुवाद केवल साहित्य तक ही सीमित था किंतु ग्लोबलाइजेशन के इस दौर में संपूर्ण विश्व एक ही प्लेटफार्म पर आ गया है और यह सब अनुवाद के कारण ही संभव हो सका है। अनुवाद के बिना हम एक दूसरे व्यक्ति के देश, धर्म, राजनीति और व्यापार आदि के विषय में कुछ भी नहीं जान सकते; अतः अनुवादक को कम से कम दो भाषाओं का ज्ञान होना अनिवार्य है जिसमें उसे पारंगत होना चाहिए जिससे वह दोनों भाषाओं की व्याकरणिक अशुद्धियों से बच सके।

मनोरंजन के क्षेत्र में

भारत का सिनेमा, टेलीविजन और रेडियो पूर्ण रूप से हिंदी भाषा पर ही निर्भर है। इन तीनों क्षेत्रों में से यदि हिंदी को अलग कर दिया जाए तो वहां कुछ भी नहीं बचेगा। इसका कारण केवल हिंदी भाषा की लोकप्रियता ही है। हिंदी को बोलने व समझने वाले केवल भारत में ही नहीं; वरन विदेशों में भी अत्यधिक मात्रा में है। विश्व की एक घनी आबादी का मनोरंजन केवल और केवल हिंदी भाषा के माध्यम से ही संभव है। केवल मनोरंजन ही नहीं सारी दुनिया के समाचार भी हमें घर बैठे अनेक चौनलों के माध्यम से प्राप्त होते हैं । हिंदी भाषी फिल्मों, टीवी सीरियलों और आकाशवाणी रेडियो में कार्य करने वाले लोगों के अनेक उदाहरण हैं जो हिंदी भाषा के प्रयोग के कारण ही प्रसिद्ध हो गए हैं। हिंदी भाषा में प्रयुक्त मुहावरे, कहावतें, लोकोक्तियां, गीत और संवाद लोगों के मन मस्तिष्क पर अपनी स्थायी छाप छोड़ते हैं और जन – जन के प्रिय भी हैं। बच्चे तक उन्हें याद कर लेते हैं और अपना मनोरंजन करते हैं। हिंदी मनोरंजन के क्षेत्र में व्यापार का भी साधन है। "विदेशी फिल्मों के साथ–साथ डिस्कवरी और नेशनल ज्योग्राफी जैसे इंफोटेनमेंट चौनलो की सामग्री की हिंदी में डबिंग के कारण एक बड़ा बाजार खुल गया है।" (३) जिससे जुड़कर प्रत्येक व्यक्ति लाभ प्राप्त करता है और इस प्रकार हिंदी इन तीनों क्षेत्रों में जीविकोपार्जन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इन क्षेत्रों में अभिनय के साथ–साथ एंकर, न्यूज़ रीडर, रेडियो जॉकी ,विज्ञापन कंपनियों में स्क्रिप्ट लेखन , फिल्मों, धारावाहिकों और नाट्य लेखन में वॉइस रिकॉर्डर कलाकार, गीतकार आदि के रूप में अपना कैरियर बना सकते हैं। यहां हिंदी भाषा पर अच्छी पकड़ और अपने कौशल के साथ–साथ व्यक्ति को प्रसिद्धि और आर्थिक लाभ दोनों प्राप्त होता है।

प्रकाशन उद्योग के क्षेत्र में: प्रकाशन जगत में आज भी सर्वाधिक प्रकाशन हिंदी भाषा में ही होते हैं। इसमें समाचार पत्र, पत्रिकाओं से लेकर अनुवादित और मूल पुस्तक प्रकाशन तथा विभिन्न प्रकार के स्कूल कॉलेज के पाठ्यक्रम संबंधी सामग्री तथा सरकार की पत्रावलियाँ आदि सभी प्रकार की सामग्री का प्रकाशन होता है। पुस्तकों का मूल एवं अनुवादित प्रकाशन करने के साथ–साथ पुस्तक समीक्षा प्रकाशन भी किया जाता है। प्रकाशन उद्योग में रोजगार हेतु हिन्दी भाषा का व्याकरणिक एवं विषय ज्ञान होना अनिवार्य आवश्यकता है। "स्थापित पत्रिकाओं/समाचार पत्रों के हिंदी रूपांतर आने से रोजगार के अवसरों में कई गुणा वृद्धि हुई है।"(४) आजकल ऑनलाइन प्रकाशन कार्य भी किया जाता है। विभिन्न प्रसिद्ध प्रकाशन – गृह यथा वाणी प्रकाशन तथा

राजकमल प्रकाशन आदि जैसे प्रकाशन गृह में नौकरी की जा सकती है या फिर अपना स्वतंत्र प्रकाशन गृह भी चला सकते हैं।

विज्ञापन जगत के क्षेत्र में

भारत में पत्रकारिता का जन्म आगस्ट हिक्की के के समय में विज्ञापन के कारण ही हुआ था। हिक्की बंगाल गजट से पूर्व बनिको के उत्पादकों को बाजार में लाने हेतु विज्ञापन के रूप में वस्तुओं की जानकारी उपलब्ध कराया करते थे। इसी से वस्तुओं की बिक्री विज्ञापनों के जरिए होने लगी और अखबार उत्पादकों की बिक्री में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगे । तब से अब तक यह परंपरा चली आ रही है। हिंदी भारत में जनसंपर्क का सुदृढ़ एवं सशक्त माध्यम है। आजकल सभी उत्पाद विज्ञापन के माध्यम से ही लोगों तक पहुंचते हैं। जब वस्तुओं को विज्ञापन में अति आकर्षक रूप में दिखाया जाता है तो उसकी बिक्री बाजार में तुरंत प्रभावशाली रूप से होती है। अति महत्वपूर्ण और दैनिक जीवन में प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं को लुभावने ऑफर के साथ प्रस्तुत किया जाता है जिसमें भाषा का ही महत्वपूर्ण योगदान है। विज्ञापन चाहे पोस्टर में हो या पत्र– पत्रिकाओं में अथवा टेलीविज़न में, सभी जनता को लुभाते हैं। रोजगार की दृष्टि से टीवी में विज्ञापन – लेखन, रेडियो में एड स्क्रिप्ट, ब्रांड स्लोगन लेखन में आकर्षक विकल्प हैं। किसी वस्तु के बारे में साधारण रूप से उसके गुण न बताकर उसे प्रभावशाली भाषा के द्वारा जब प्रस्तुत किया जाता है तो वह लोगों को अति आवश्यक और अति उपयोगी भी लगती है और व्यक्ति उसे खरीदने के लिए इच्छुक हो जाते हैं, इसीलिए विज्ञापन की भाषा ऐसी होनी चाहिए कि विज्ञापन पढ़ते ही उस वस्तु के प्रति तत्काल आवश्यकता अनुभव होने लगे। एक पेन का विज्ञापन देखिए – 'परीक्षा में जो दिलाए सर्वाधिक अंक, प्रकाश पेन है सफलता का मंत्र'।

विज्ञापन कई प्रकार के होते हैं, सरकारी योजना एवं जनकल्याण संबंधी विज्ञापन। विज्ञापन में स्लोगन लेखन के द्वारा रोजगार प्राप्ति की जा सकती है। यह बड़े ही प्रभावशाली होते हैं, जैसे 'सुरक्षा से नाता जोड़ो, दुर्घटना से मुंह मोड़ों', 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ', ' योग भगाए रोग', ' जय जवान, जय किसान', 'करें योग ,रहे निरोग' आदि – आदि।

कई बार विज्ञापन कंपनियों के ऑफर जैसे धमाका ! , सेल, सेल, सेल, खुल गया–खुल गया, पहले आओ, पहले पाओ, 100% गारंटी के साथ, विशेष ऑफर/छूट, आकर्षक कीमत ! जैसा दाम – वैसा काम आदि स्पष्ट एवं विशेष आकर्षक शब्दों के साथ विज्ञापन दिखाए जाते हैं।

केवल सरकार या कंपनियां ही नहीं एक साधारण व्यक्ति को भी जब अपनी कोई संपत्ति खरीदनी/ बेचनी हो तो वह विज्ञापन का ही सहारा लेता है। ऐसे अवसरों का लाभ उठाते हुए व्यक्ति इस क्षेत्र में अपना रोजगार स्थापित कर सकते हैं । इस प्रकार के विज्ञापनों में वर्गीकृत विज्ञापन स्थानीय आवश्यकता पूर्ति और सूचना प्रदान करने हेतु भी प्रसारित किए जाते हैं । संपत्ति खरीदने– बेचने हेतु , वैवाहिक, खोया – पाया, किराये हेतु चाहिए / किराए हेतु खाली आदि के द्वारा विज्ञापन प्रसारण होता है। बैनर, पोस्टर, होर्डिंग, समाचार पत्र, रेडियो, टीवी एवं टेलीविजन में लुभावनी, प्रेरक शब्दावली से युक्त भाषा आदि में प्रवीणता आवश्यक है। अतिशयोक्ति पूर्ण काव्य पंक्तियां, मुहावरे, लोकोक्तियां, तुकबंदी और प्रभावशाली भाषा का प्रयोग करके अनुवाद अथवा किसी अन्य भाषा के साथ मिलकर उत्पाद के प्रस्तुतीकरण को आकर्षक बनाया जा सकता है। अतः विज्ञापन जगत में रोजगार पाने के लिए व्यक्ति को भाषागत वैशिष्ट्य के साथ–साथ अभिव्यक्ति – कौशल एवं उत्पादक प्रस्तुतीकरण तथा बाजार एवं जनता की आवश्यकता का ज्ञान भी भली–भांति होना अपेक्षित है।

सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानों में

प्रमुख सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानों में समय–समय पर हिंदी के विषय विशेषज्ञों के विभिन्न पदों पर भर्तियां होती हैं। उच्च शिक्षा में हिंदी विषय को चुनकर व्यक्ति यहां रोजगार प्राप्त कर सकता है और विभिन्न प्रशासनिक पद लेखक, अनुवादक, प्रकाशक, प्रशिक्षु तथा शिक्षक के रूप में कार्य कर सकता है। यह संस्थाएं हिंदी के प्रचार– प्रसार में अग्रणी भूमिका निभाती है जिनमें भाषा का मानकीकरण, सशक्तिकरण, अनुसंधान, तकनीकी विकास(शब्दकोश आदि) द्वारा ,भाषा नीतियों का निर्माण आदि कार्य किया जाता है। यहां पाठ्यक्रम संबंधी निर्माण कार्य एवं प्रशिक्षण कार्य भी होता है। प्रमुख सरकारी संस्थानों में केंद्रीय हिंदी निदेशालय, हिंदी प्रचार सभा, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय, साहित्य अकादमी नई दिल्ली, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास नई दिल्ली, राष्ट्रीय भाषा परिषद, हिंदी सलाहकार समिति ,राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एन सी ई आर टी), विश्वविद्यालय अनुदान आयोग(यूजीसी), प्रसार भारती, दूरदर्शन आदि विभिन्न नामों की लंबी सूची है। इनके साथ ही गैर सरकारी संस्थानों में भी समय–समय पर विभिन्न पदों पर रिक्तियां निकलती है। हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयागराज, भारतीय भाषा परिषद कोलकाता, भारतीय विद्या भवन मुंबई, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, हिंदी प्रचार परिषद नागपुर, लोकभारती संस्थान, हिंदी प्रचारिणी सभा वाराणसी आदि नाम हैं जिनमें रोजगार हेतु अनेक अवसर हैं।

पर्यटन के क्षेत्र में

पर्यटन उद्योग का विस्तार संपूर्ण पृथ्वी पर हो चुका है। यहां देश–विदेश के अनेक पर्यटन स्थलों पर रोजगार की अपार संभावनाएं प्रकट हो गई हैं, जिससे व्यक्ति क्षेत्रीय भाषा के साथ हिंदी का संयोजन करके टूर एंड ट्रेवल्स जगत में रोजगार स्थापित कर सकता है। इस क्षेत्र में अनुवादक की सर्वाधिक आवश्यकता होती है, उसके बाद पर्यटन पत्रकारिता अथवा यात्रा विवरण लेखन कार्य, रिपोर्टिंग आदि में कैरियर निर्माण कर सकते हैं। डिजिटल सामग्री भी तैयार कर सकते हैं जिसमें ब्लॉग एवं यूट्यूब वीडियो, फोटो गैलरी तथा स्वतंत्र चौनल निर्माण शामिल है। वे ऑनलाइन पर्यटकों हेतु गाइडलाइन भी उपलब्ध करा सकते हैं।

इंटरनेट एवं तकनीकी क्षेत्र में

वर्तमान युग इंटरनेट एवं डिजिटल क्रान्ति का युग है। कंप्यूटर का प्रयोग विभिन्न क्षेत्रों में अधिकाधिक होने के कारण हिंदी भाषा का भी कंप्यूटरीकरण हो गया है। आज गूगल पर हिंदी में कोई शब्द टाईप करें तो उसकी विस्तृत जानकारी अर्थ, अनुवाद और प्रयोग सहित तुरन्त उपलब्ध हो जाती है। "गूगल के अधिकारियों का मानना है कि भविष्य में केवल स्पेनिश ही नहीं अंग्रेजी में चीनी भाषा के साथ हिंदी ही इंटरनेट की प्रमुख भाषा होगी।"(५)

आज इंटरनेट पर हिंदी में अनेक वेबसाइट और फॉन्ट उपलब्ध हैं। सन् 2019 में ई – महाकोश ऐप का विमोचन भी हो चुका है "राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने सी. डेक. पुणे के तकनीकी सहयोग से ई– महाकोश का निर्माण किया है।" (६) अब कंप्यूटर के साथ–साथ मोबाइल में भी हिंदी के सारे फॉन्ट मिलते हैं। वेबसाइट निर्माण, कंटेंट राइटर, टाइपिंग आदि में जीविकोपार्जन किया जा सकता है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर

भूमंडलीकरण के इस युग में हिन्दी वैश्विक स्तर पर भी अपनी स्वतंत्र पहचान बना चुकी है। वैश्विक पटल पर हिंदी भाषा को पहचान दिलाने का श्रेय पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी

जी को जाता है जिन्होंने विदेश मंत्री के रूप में 1977 में संयुक्त राष्ट्र महासभा के मंच पर हिंदी में पहली बार भाषण दिया। तब पूरी दुनिया ने भारत की भाषा और विचारों की ताकत को समझा। तब से हिंद की लोकप्रियता में वृद्धि हो रही है। यदि व्यक्ति पूरी दुनिया में कहीं भी रोजगार प्राप्ति करने का प्रयास करता है तो हिंदी भाषा उसे कहीं हीनभावना से ग्रस्त नहीं होने देगी।

निष्कर्ष

स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में हिंदी के क्षेत्र में रोजगार की असीमित संभावनाएं नजर आती हैं। अब हिंदी केवल अध्ययन – अध्यापन अथवा अभिव्यक्ति का साधन मात्र न रहकर वैश्विक पटल पर अपना वर्चस्व सिद्ध कर चुकी है। भारत में सरकारी और निजी क्षेत्र से लेकर विदेशों में भी हिंदी का प्रयोग होने लगा है। आज सभी कार्यों में कंप्यूटर की आवश्यकता के कारण हिंदी भाषा का भी कंप्यूटरीकरण हो चुका है; इसलिए हिंदी भाषा डिजिटल संसार में अनिवार्य आवश्यकता बन चुकी है। अब यदि व्यक्ति रोजगार की दृष्टि से हिंदी को बिना किसी हीन भावना के चुनता है तो उसके सामने बहुत सारे विकल्प है। हिंदी प्रत्येक दृष्टि से संपन्न भाषा बन चुकी है और जन–जन में प्रिय भी। अतः यह भाषा व्यक्ति को सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी रूप से समृद्धशाली बनाने में पूर्ण सहायक सिद्ध हो रही है।

संदर्भ

1. महेश कुमार यादव ,8 सितंबर 2010, हिंदी ऑफिसर्स ब्लॉग wordpress.com
2. अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएं', सौरभ आर्य, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, इस्पात मंत्रालय, जनसत्ता, जून 16,2021
3. वही
4. हिंदी भाषा में रोजगार के अवसररू हिंदी कुंज. कॉम 9सितंबर, 2019
5. राजभाषा भारती, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, वर्ष 41, संयुक्त अंक, पृष्ठ 39।
6. Wikipedia: https://ni.wikipedia.orh